HISTORY, B.A. HONS. II - PAPER. II

SIGNIFICANCE OF THE VIENNA CONGRESS (विएना कांग्रेस का महत्व)

यद्यपि विएना कांग्रेस ने अनेक भूलें कीं, किन्तु फिर भी उसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। साथ ही हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि विएना कांग्रेस किन परिस्थितियों में हुई थी। युद्ध से त्रस्त यूरोप में शान्ति स्थापित करना इसका प्रमुख उद्देश्य था, जिसमें वह सफल हुई थी। यह भी निर्विवाद है कि विएना कांग्रेस द्वारा की गयी व्यवस्था 1919 ई. में पेरिस व्यवस्था से कहीं अधिक उच्चकोटि की थी। विएना कांग्रेस में समझौते एवं स्थापित शान्ति को प्रमुख स्थान देते हुए फ्रांस को किसी प्रकार से अपमानित करने का प्रयास नहीं किया गया, यहाँ तक कि मित्र राष्ट्रों ने फ्रांस को अपने समान ही स्थान दिया, जबकि 1919 ई० में जर्मनी के साथ अत्यधिक कठोर व्यवहार कर उसे पुनः युद्ध करने के लिए प्रेरित करने का बीज बो दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप 1939 ई. में ही द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया। इसके विपरीत विएना कांग्रेस के लगभग 100 वर्षों तक विश्वयुद्ध न हुआ।

विएना सम्मेलन के कुछ महत्वपूर्ण परिणाम हुए, जो इसप्रकार हैं:-

(i) विएना कांग्रेस ने यूरोप में शांति की स्थापना की तथा आगामी 40 वर्षों तक यूरोप में कोई युद्ध न हुआ।

(ii) इस कांग्रेस द्वारा यूरोप के राज्यों को पहली बार यह आभास हुआ कि यूरोपीय झगड़ों को विचार विमर्श से भी सुलझाया जा सकता है।

(iii) इस कांग्रेस के परिणाम स्वरूप ही कुछ वर्षों के उपरान्त पवित्र संघ एवं चतुर्भुज संघ की स्थापना हुई।

(iv) इस कांग्रेस में ही इस नियम का प्रतिपादन किया गया कि यदि दो राज्य परस्पर मिला दिए जाएं तो दूसरे राज्य के प्रतिनिधि भी उस राज्य की संसद में आ जायेंगे तथा उनकी स्थानीय संस्थाओं एवं हितों का ध्यान रखा जायेगा।

(v) विएना कांग्रेस में दास प्रथा की भी भर्त्सना की गयी।

(vi) विएना कांग्रेस में ही कुछ अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का भी प्रतिपादन

(vii) इस कांग्रेस में ही जर्मनी एवं इटली के एकीकरण की भूमिका की नींव पड़ी।

विएना कांग्रेस के प्रतिनिधियों पर यह भी आरोप

लगाया जाता है कि उन्होंने जन भावनाओं एवं लोकतांत्रिक सिद्धांतों की अवहेलना की, किन्तु उनकी आलोचना करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि उस संकट के समय में यदि जनमत को निर्णय का आधार बनाया जाता तो यूरोप में पुन: युद्ध के बादल छा जाते क्योंकि लोकतांत्रिक प्रवृत्तियाँ तब तक विकास की अवस्था में थीं न कि परिपक्व स्थिति में। डेविड टामसन ने भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है, "वियना का समझौता पुरानी परिपाटी के शासकों एवं अभिजातवर्गीय कूटनीतिज्ञों द्वारा सम्पन्न हुआ था और वह 18 वीं शताब्दी की विचारधारा से ओतप्रोत था। अत: 19 वीं सदी के तीव्र गति से बदलते हुए विश्व में उसके निर्णयों की उपयुक्तता एवं स्थायित्व बने रहने की आशा नहीं की जा सकती थी। वियना समझौते के निर्माताओं को राष्ट्रीयता अथवा उदारवाद की भावनाओं के महत्व को न समझने के लिए दोषी ठहराना अनुचित होगा क्योंकि 1885 ई० में बहुत कम लोग उनका महत्व समझते थे। ग्राण्ड एण्ड टेम्परले ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं। उसके शब्दों में "यह सत्य है कि वे प्राचीन व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते थे और अधिकांश रूप से नवीन विचारों से अछूते थे किन्तु वे पुराने शासन के निकृष्ट रूप के नहीं, उत्कृष्टतम रूप के प्रतिनिधि थे और उनकी व्यवस्था ने यूरोप को 40 वर्ष तक युद्धों से बचाए रखा। इसके साथ ही वियना कांग्रेस के कार्यों का मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिये कि इसके प्रतिनिधियों के हाथ पूर्व संधियों से बंधे हुए थे।

अत: स्पष्ट है कि विभिन्न दोषों एवं अवगुणों के पश्चात् भी वियना कांग्रेस का यूरोपीय इतिहास में ~~कि~~ विशिष्ट स्थान है। यही कारण है कि वियना कांग्रेस के विषय में केटलबी ने लिखा है, "इस कांग्रेस में राजनीति, संयम और दूरदर्शिता से काम लिया गया तथा इसने एक ऐसा आधार तैयार किया जिस पर भविष्य के यूरोप की नींव रखी गई।

S.K. Sinha